राज्य अध्याय 10

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश करने के विषय में इस पाठ को प्रभु के लिए प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **1शमूएल 15-18**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (1शमूएल 15,16,17 और 18) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख पद)*** **(4) रोमियों 2:15**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) रोमियों 2:15। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 3:1-20**

परिचय। **रोमियों 3:1-20** का एक साथ अध्यनन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 1:18-32 में, पौलुस दिखाता है कि अन्यजातियों को परमेश्वर के क्रोध का अनुभव हो रहा है और कि उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। रोमियों 2:1-29 में वह दिखाता है कि यहूदी भी अपने लिए परमेश्वर के क्रोध को इकट्ठा कर रहे हैं और कि उन्हें भी परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। रोमियों 3:1-20 में, वह अपने तर्कों के विरुद्ध यहूदी आपत्तियों का खंडन करता है और अपने शिक्षण की पुष्टि करता है कि कोई भी अन्यजाति या यहूदी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं है। यह वह बाइबल से प्रमाणित करता है।

<u>चरण 1. पढ़ें।</u> **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइए एक साथ पढ़े रोमियों 3:1–20।

आइए हम बारी–बारी एक–एक पद तब तक पढ़ें, जब तक कि हम पढ़ना पूरा न कर लें।

<u>चरण 2. खोज करें।</u> **अवलोकन**

विचार करें। इस पद में आपके लिए कौन सा सत्य महत्वपूर्ण है?

या इस पद में से कौन–सा सत्य आपके दिमाग या दिल को छूता है?

अभिलेखित करें। एक या दो सत्यों की खोज करें जिन्हें आप समझते हैं। उनके विषय में सोचें और अपने विचारों को अपनी स्मरण–पुस्तक में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट का समय मिल गया हो, तब साझा करने के लिए बारियाँ लें)।

आइए हम एक दूसरे के साथ साझा करने के लिए बारियाँ लें, जो कुछ भी हमने खोजा है।

(स्मरण रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

3:1–8

<u>खोज 1.</u> **<u>पौलुस अपने तर्कों के विरुद्ध यहूदी आपत्तियों का खंडन करता है कि दोनों अन्यजाति और यहूदी परमेश्वर के सामने दोषी खड़े हैं।</u>**

जहाँ भी मसीही सत्य की घोषणा करते हैं, मसीहियों के विरोधी आपत्तियों का उत्पादन करेंगे ताकि मसीहियों को गलत साबित किया जा सके। इस प्रकार, अविश्वासी यहूदियों ने पौलुस द्वारा सुसमाचार की घोषणा का विरोध किया और उसे दुनिया की दृष्टि में बदनाम करने का प्रयास किया। उन्होंने पौलुस का विरोध उसी प्रकार किया जैसे उन्होंने पुराने नियम के समय के भविष्यवक्ताओं और नए नियम के समय के दौरान यीशु मसीह का विरोध किया था।

यहूदियों का अपरिहार्य विचार यह था कि परमेश्वर ने यहूदियों को अब्राहम के समय से ही अपने लोगों के रूप में चुना है। उनका मानना था कि यदि यहूदी व्यवस्था और विशेष रूप से शारीरिक खतना करके परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को बनाए रखते हैं, तो वे कभी भी अन्यजातियों के समान दोषी नहीं ठहराए जाएँगे।" (मत्ती 3:9; यूहन्ना 8:33)! यहूदियों का मानना था कि परमेश्वर का अनन्त राज्य पूर्ण संसार में यहूदियों को ही दिया जाएगा। वे यह भी मानते थे कि परमेश्वर का राज्य उन्हें दिया जाए, चाहे वे परमेश्वर के प्रति कितने भी पापी और अवज्ञाकारी क्यों न रहे हों!

यीशु ने पहले से ही मत्ती 8:11–12 में यहूदियों के विचारों का खंडन किया, जहाँ उसने कहा था, "कई लोग पूर्व और पश्चिम से आएँगे और स्वर्ग के राज्य में अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ दावत में अपने स्थान लेंगे। परन्तु राज्य की प्रजा को बाहर अंधेरे में फेंक दिया जाएगा, जहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा" (मत्ती 8:11–12; तुलना 21:42–44)।

प्रेरित पौलुस ने रोमियों 2:5 में भी यहूदियों के इस विचार का खंडन किया, जहाँ उसने कहा, "पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित क्रोध कमा रहा है।"

यहूदियों ने रोमियों अध्याय 2 में पौलुस के तर्क पर सख्ती से आपत्ति जताई कि यहूदियों को अंतिम

न्याय के दिन अन्यजातियों के *साथ* दोषी ठहराया जाएगा (सर्वनाश) (मत्ती 25:31-46)। यहूदियों की दो मुख्य आपत्तियाँ थीं।

- उनकी <u>पहली आपत्ति</u> यह थी कि परमेश्वर ने यहूदियों को कुछ लाभ या विशेषाधिकार दिए थे, जो उसने अन्यजातियों को नहीं दिए थे। यहूदियों के अनुसार, इन लाभों या विशेषाधिकारों ने आश्वासन दिया कि यहूदी हमेशा वाचा (व्यवस्था) रखने के कर्तव्य के साथ परमेश्वर के लोग होंगे और परमेश्वर द्वारा कभी भी अस्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- यहूदियों की <u>दूसरी आपत्ति</u> यह थी कि परमेश्वर का यह दायित्व था कि वे यहूदियों के प्रति अपनी वाचा के वादे में विश्वासयोग्य रहे, चाहे यहूदी कितने भी अविश्वासयोग्य हों।

परन्तु पवित्र आत्मा ने पौलुस को बुद्धि दी कि कैसे अविश्वासी यहूदियों की इन आपत्तियों का खंडन करे। यह जानना उत्साहजनक है कि उसके विरोधी उस बुद्धि या आत्मा के विरुद्ध नहीं खड़े हो सकते थे जिसके द्वारा उसने बोला था (मत्ती 10:17-20; प्रेरितों के काम 6:9-10)!

3:9-20

<u>खोज 2</u>. <u>पौलुस शिक्षा को पुराने नियम से साबित करता है कि अन्यजाति और यहूदी दोनों परमेश्वर के सामने दोषी ठहराए (सर्वनाश) खड़े हैं</u>।

यहूदियों के झूठे तर्कों का खंडन करने के पश्चात, पौलुस रोमियों 1:18 से 3:8 तक यह कहते हुए अपने तर्क को समाप्त करता है कि उचित ठहराए जाने के संबंध में, किसी भी यहूदी के पास अन्यजातियों की तुलना में कोई अधिक लाभ या विशेषाधिकार नहीं था। किसी भी इंसान के पास दूसरे इंसान की तुलना में कोई अधिक लाभ नहीं है। सभी लोग पाप की शक्ति, प्रदूषण और दोष के अधीन हैं, और इसलिए न्यायपूर्वक परमेश्वर द्वारा दोषी ठहराए जाने के सामने अरक्षित हैं (सर्वनाश) (3:9)।

रोमियों 3:10-18 में, बाइबल की गवाही द्वारा पौलुस पाप की सार्वभौमिकता की शिक्षा को साबित करता है। वह यहूदियों को यह साबित करने के लिए पुराने नियम से कई ज्ञात भागों को उद्धृत करता है कि उनके अपने पवित्र पद उनको दोषी ठहराते हैं। <u>यहूदियों की आपत्तियों को बाइबल में से परमेश्वर के आधिकारिक वचनों से चुप्प कर दिया गया है!</u>

पौलुस यह निष्कर्ष निकालता है कि बाइबल में परमेश्वर का विशिष्ट प्रकाशन उन सभी को संबोधित करता है जो उस प्रकाशन से परिचित हैं। यह उस प्रत्येक मुँह को चुप्प कर देता है जो उसकी पापमयता के विरुद्ध आपत्ति जताता है। अंतिम न्याय के दिन सभी लोग परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे और उनका उनके कार्यों के अनुसार न्याय किया जाएगा। परमेश्वर उन्हें उनके विचारों, उद्देश्यों, रवैयों, योजनाओं, संबंधों और कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराएगा। परमेश्वर किसी एक व्यक्ति को भी व्यवस्था के पालन के आधार पर धर्मी घोषित नहीं करेगा! <u>व्यवस्था मात्र एक व्यक्ति को भी उचित ठहरा या बचा नहीं सकती है!</u> इसके बजाय, व्यवस्था लोगों को जागरूक करती है कि वे पापी हैं और उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। व्यवस्था लोगों को जागरूक करती है कि उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है!

चरण 3. प्रश्न। **व्याख्या**

विचार करें। इस पद में से किसी भी चीज के विषय में कौनसा प्रश्न आप इस समूह से पूछना पसंद करेंगे? आइए हम रोमियों 3:1-20 के सभी सत्यों को समझने का प्रयास करें और उन चीजों के विषय में प्रश्न पूछें जिन्हें हम अभी भी नहीं समझते हैं।

अभिलेखित करें। अपने प्रश्न को यथासंभव स्पष्ट रूप से तैयार करें। फिर अपनी स्मरण-पुस्तक में अपना प्रश्न लिखें।

साझा करें। (समूह के सदस्यों को सोचने और लिखने के लिए लगभग दो मिनट मिलने के पश्चात, पहले प्रत्येक व्यक्ति को अपना प्रश्न साझा करने दें।)

चर्चा करें। (फिर, इनमें से कुछ प्रश्नों को चुनें और उन्हें अपने समूह में एक साथ चर्चा करके उत्तर देने का प्रयास करें।) (प्रश्नों के उदाहरण जो छात्र पूछ सकते हैं और प्रश्नों की चर्चा के विषय में कुछ नोट्स निम्नलिखित हैं।)

3:1-2

प्रश्न 1. **परमेश्वर के विशेषाधिकार जो उसने इस्राएल को दिए क्यों इसका आश्वासन नहीं हो सकते कि यहूदियों को उचित ठहराया जाएगा ?**

ध्यान दें।

रोमियों के अध्याय 2 में, पौलुस ने निष्कर्ष निकाला कि यहूदी, अन्यजातियों के समान, परमेश्वर के न्याय से बच नहीं पाएँगे। उनके विशेषाधिकारों के आधार पर उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाएगा, परन्तु उनके स्वयं के कार्यों के आधार पर और इसके कि परमेश्वर के प्रकाशन के विषय में उन्हें कितना पता है।

यहूदियों ने आपत्ति जताई कि पौलुस का निष्कर्ष इस्राएल (यहूदी राष्ट्र) के भौतिक या राष्ट्रीय राष्ट्र के स्वीकृत विशेषाधिकार या लाभों के साथ असंगत है। यहूदियों का विचार था कि परमेश्वर ने उन्हें जो भी लाभ दिए थे, वे इस बात का प्रमाण थे कि परमेश्वर ने उन्हें स्वीकार किया है और वह कभी उन्हें अस्वीकार नहीं करेगा।

पौलुस ने स्वीकार किया कि यहूदियों को बहुत लाभ मिले थे (रोमियों 9:4-5; इफिसियों 2:11-12)। उनके सबसे बड़े लाभों में से एक यह था कि उन्हें परमेश्वर के अति स्वयं के शब्द सौंपे गए थे (रोमियों 3:2)। परमेश्वर के इन शब्दों को बाद में व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक (अर्थात्, पुराना नियम। तुलना लूका 24:25-27,44-45; यूहन्ना 5:45-47) बनाने के लिए अभिलेखित किया गया था (रोमियों 3:21))।

हालांकि, पौलुस का कहना था कि यहूदियों के ये सभी लाभ उनके उचित ठहराए जाने या उद्धार का आश्वासन नहीं देते हैं! उदाहरण के लिए, व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की बहुत सी पुस्तकें यहूदियों सहित सभी लोगों को अधर्मी होने हेतु दोषी ठहराती हैं (रोमियों 3:10-18)! इसलिए, यहूदी भी अधर्मी हैं और अपने विशेषाधिकारों और लाभों से उचित नहीं ठहराए जाएँगे! अंतिम न्याय के दिन एक भी विशेषाधिकार उन्हें परमेश्वर के प्रकोप से नहीं बचाएगा।

बाद में, पौलुस ने घोषणा की कि सभी लोगों, यहूदी और अन्यजातियों को केवल यीशु मसीह में उनके विश्वास के द्वारा ही उचित ठहराया जा सकता है (रोमियों 3:22)!

3:3–4

प्रश्न 2. **परमेश्वर की विश्वासयोग्यता इसका आश्वासन क्यों नहीं दे सकती कि यहूदी उचित ठहराए जाएँगे ?**

ध्यान दें।

यहूदियों ने इस बात पर आपत्ति जताई कि पौलुस का निष्कर्ष इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के वादे के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के साथ असंगत है। यहूदियों ने यह विचार बनाए रखा कि परमेश्वर अपने वादों के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा, *तब भी जब इस्राएली परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य हो जाएँगे*। वे झूठा विश्वास करते थे कि अपने वादों के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता उनके उचित ठहराए जाने का आश्वासन देती है, भले ही परमेश्वर के प्रति उनकी अविश्वासयोग्यता कितनी भी बड़ी क्यों न हो।

पौलुस का कहना था कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता अभेद्य है। इस्राएल के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और इस्राएल के प्रति उसके वादों को लेकर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता है!

हालाँकि, परमेश्वर के प्रति इस्राएल की अविश्वासयोग्यता (उनका अविश्वास और अवज्ञा) को लेकर प्रश्न उठाया जा सकता है! परमेश्वर की वाचा के वादे से जुड़ी शर्तों (विश्वास और आज्ञाकारिता से युक्त) (इब्रानियों 4:1–2,6) को पूरा नहीं करने में इस्राएल की अविश्वासयोग्यता स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की किताबों में यहूदी राष्ट्र के सबसे बड़े राजा, दाऊद ने स्वीकार किया था कि वह स्वयं पूर्ण रीति से अधर्मी था। उसने स्वयं को एक कुकर्मी के रूप में दोषी ठहराया, परन्तु फिर भी स्वीकार किया कि परमेश्वर पूर्ण रीति से धर्मी था (भजन संहिता 51:4–6)! पुराने नियम में यह उदाहरण साबित करता है कि परमेश्वर हमेशा धर्मी है, परन्तु यहूदी धर्मी नहीं हैं। इस्राएल के लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के वादे की दो शर्तें थीं: उन्हें विश्वास करना था और आज्ञा माननी थी। परमेश्वर अपनी वाचा के वादे के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा, जब तक कि इस्राएल वाचा के वादे से जुड़ी शर्तों का पालन करता रहेगा। परन्तु जब यहूदियों ने वाचा के वादे से जुड़ी शर्तों को मानने में अपनी जिम्मेदारी की उपेक्षा की, तो परमेश्वर अपनी वाचा के वादे को निभाने के लिए बाध्य नहीं था।

3:5–8

प्रश्न 3. परमेश्वर की धार्मिकता इसका आश्वासन क्यों नहीं देती कि यहूदी उचित ठहराए जाएँगे ?

ध्यान दें।

यहूदियों ने झूठे तर्क के आधार पर अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर की धार्मिकता के न्याय से बचने की अपेक्षा की। उन्होंने तर्क दिया कि उनकी अपनी अधार्मिकता ने परमेश्वर की धार्मिकता को अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट किया (प्रकाश में लाई) है। उन्होंने तर्क दिया कि परमेश्वर की धार्मिकता और उनकी स्वयं की अधार्मिकता के बीच जितनी विपरीतता होगी, उतना उज्जवल परमेश्वर का धर्मी चरित्र चमकेगा और उतनी सरलता से लोग यह देख पाएँगे कि परमेश्वर की धार्मिकता कितनी महान थी! उनका सामान्य मानवीय तर्क यह था कि यदि यहूदियों के झूठ और अधार्मिकता ने परमेश्वर की सत्यता और धार्मिकता को बढ़ाया है और परमेश्वर के प्रति अधिक महिमा लाया है, तो परमेश्वर अन्यायपूर्ण होगा यदि वह यहूदियों को उनकी अधार्मिकता के लिए दोषी ठहराता है!

पौलुस का कहना है कि इस प्रकार का तर्क न केवल अति दुष्ट है, परन्तु पूर्ण रीति से असमर्थनीय भी है। इस प्रकार का तर्क अति दुष्ट है, क्योंकि यह परमेश्वर को अधर्मी यहूदियों के बराबर ही

अधर्मी बनाता है। यदि परमेश्वर यहूदियों की दुष्टता को दोषी नहीं ठहरता और दंड नहीं देता, तो वह अधर्मी होगा और यहूदियों का न्याय करने में असमर्थ होगा!

इसके अलावा, दुष्ट अन्यजाति इसी तर्क का उपयोग कर सकते हैं और परमेश्वर अन्यजातियों का न्याय नहीं कर सकेगा। इसके फलस्वरूप, परमेश्वर संसार में किसी का न्याय नहीं कर पाएगा! यहूदियों का यह तर्क अनैतिक शिक्षण को बढ़ावा देगा, अर्थात्, "लोग जितना अधिक बुरा करेंगे, उसमें से उतनी ही अच्छाई निकलेगी!" या "लोग जितना अधिक पाप करेंगे, उतना ही अधिक वे परमेश्वर की महिमा देंगे।" परमेश्वर तब भी पापियों का न्याय करने में कैसे सक्षम होगा?

पौलुस की शिक्षा कि लोगों को विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा बचाया जाता है और उनके व्यवस्था के कार्यों से नहीं का यह अर्थ नहीं है कि लोगों को इस तथ्य के बावजूद बचाया जाता है कि वे ईश्वरहीनता, दुष्टता और अराजकता में जारी रहते हैं। जो यहूदी तर्क देते हैं कि वे अपनी ईश्वरहीनता, दुष्टता और अराजकता के बावजूद बचे हुए हैं, वे परमेश्वर द्वारा पूर्ण रीति से दोषी ठहराए जाने (सर्वनाश) के योग्य हैं। "हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते" (यशायाह 5:20)। <u>वे सभी मानवीय या धार्मिक शिक्षाएँ झूठी शिक्षाएँ हैं, जो अनैतिक व्यवहार की ओर ले जाती हैं</u>!

3:9-18

***<u>प्रश्न 4</u>*. <u>पौलुस अपनी शिक्षा को कैसे साबित करता है कि परमेश्वर के सामने अन्यजाति और यहूदी दोनों दोषी खड़े हैं</u>?**

ध्यान दें।

(1) बाइबल शिक्षा के लिए (जिसमें एक मसीही को विश्वास करना चाहिए) और जीवन के लिए (जैसा एक मसीही को व्यवहार करना चाहिए) अंतिम अधिकार है।

रोमियों 1:18 से 3:8 में पौलुस के तर्क ने यह आरोप लगाया कि यहूदी और अन्यजाति पाप के तहत एक जैसे हैं। <u>*उचित ठहराए जाने के संबंध में*, किसी भी यहूदी के पास अन्यजातियों की तुलना में कोई अधिक लाभ या विशेषाधिकार नहीं था</u>!

पौलुस बाइबल से कई भागों को उद्धरण करके इस शिक्षा को साबितकरता है। इससे पता चलता है कि <u>यहूदियों का विचार (विश्वास या धारणा) उससे अधिक महत्वपूर्ण नहीं है जो बाइबल इस बात के विषय में बताती है</u>! बाइबिल मसीही शिक्षा (जो मसीही मानते हैं) और मसीही जीवन (जैसे मसीही व्यवहार करते हैं) के लिए अंतिम अधिकार है! स्वयं परमेश्वर से कम कोई भी पाप की सार्वभौमिकता की घोषणा नहीं करता हैः सभी लोग बिना किसी प्रकार के भेद के पाप की शक्ति, प्रदूषण, अपराध और दोष (सर्वनाश) के अधीन हैं। पौलुस यहूदियों को साबित करने के लिए पुराने नियम से कई ज्ञात भागों को उद्धृत करता है कि उनके अपने पवित्र लेख उन्हें दोषी ठहराते हैं!

(2) बाइबल अधार्मिकता की सार्वभौमिकता को साबित करती है।

ये भजन संहिता 14:1-3 और भजन संहिता 53:1-3 के उद्धरण हैं। "एक व्यक्ति भी अपने आप में धर्मी नहीं है"। बाइबल में प्रकाशन के बिना "किसी को भी सही समझ नहीं है" परमेश्वर की सच्चाइयों की या अपनी स्वयं की अपमानजनक स्थिति की। "कोई भी परमेश्वर की खोज नहीं करता है", अर्थात्, कोई भी अपने स्वभाव, शक्ति या बुद्धि के द्वारा न तो परमेश्वर की आज्ञा मानता, न सेवा

या आराधना करता है। प्राकृतिक मनुष्य बाइबल के परमेश्वर से दूर हो जाता है और परमेश्वर की ओर जाने वाले सही मार्ग से बचता है। "सभी किसी काम के नहीं रहे हैं", अर्थात्, हर कोई नैतिक रूप से भ्रष्ट (दूषित) हो गया है। "संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो अच्छा करता है" इस अर्थ में कि परमेश्वर उसकी अच्छाई को स्वीकार करेगा (तुलना लूका 18:19)। किसी व्यक्ति के कथित अच्छे काम (यशायाह 64:6) उसके पाप के विरुद्ध परमेश्वर के धर्मी क्रोध को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। प्राकृतिक मनुष्य या "धार्मिक व्यक्ति" के सभी तथाकथित "धार्मिक कार्य" "गंदे चिथड़ों" के समान हैं (यशायाह 64:6); वे पाप के विरुद्ध परमेश्वर के धर्मी आक्रोश को दूर करने के लिए बिल्कुल अपर्याप्त हैं। अंतिम न्याय के दिन, धार्मिक आदमी के धार्मिक कार्य और प्राकृतिक आदमी के अच्छे काम उसके तराजू को अपने पक्ष में नहीं कर पाएँगे! इस प्रकार, बाइबल साबित करती है कि लोगों की आध्यात्मिक और नैतिक भ्रष्टता सार्वभौमिक है।

(3) बाइबल बोलने में दुष्टता को साबित करती है।

ये भजन संहिता 5:9, 10:7 और 140:3 के उद्धरण हैं। हमेशा कुछ लोग होते हैं जिन्हें आपत्ति होती है। वे इस बात को बनाए रखते हैं कि वे पापी नहीं हैं और न ही अनैतिक या भ्रष्ट हैं। उनका तर्क है कि, क्योंकि वे हत्या, व्यभिचार या चोरी नहीं करते हैं, इसलिए वे पापी नहीं हैं! तथापि, पौलुस प्रत्येक व्यक्ति की जीभ के पापों द्वारा उनकी पापमयता को दिखाता है। तथाकथित अच्छे और सभ्य लोगों सहित सभी लोग, अपनी जीभ से पाप करते हैं। लोगों के मुँह से निकलने वाले शब्द किसी कब्र से निकलने वाली घृणास्पद गंध या जहरीले साँप के काटने जैसे होते हैं। वे झूठ बोलते हैं और धोखा देते हैं, गपशप करते हैं, गालियाँ देते हैं, कड़वाहट व्यक्त करते हैं और शब्दों द्वारा लड़ते हैं। यह सब दिखाता है कि उनके हृदय में क्या छिपा है और उनकी नैतिक भ्रष्टता को साबित करता है (मत्ती 12:33-37; 15:18-19)!

हमेशा गैर-मसीहियों को आंकना पाप है (मत्ती 7:1-2; 1कुरिन्थियों 5:12-13)। स्पष्ट पाप के मामले के सिवाय, मसीहियों को आंकना (लूका 17:3-4; 1कुरिन्थियों 5:1-13; 1तीमुथियुस 5:20) भी पाप है!

(4) बाइबल कृत्यों (कर्मों) की दुष्टता को साबित करती है।

यह यशायाह 59:7-8 से लिए उद्धरण हैं। "उनके पैर हत्या करने को तत्पर रहते हैं" इसका अर्थ है कि लोग थोड़े से उकसावे पर हत्या कर देते हैं! पृथ्वी पर लोगों के "मार्गों में उजाड़ और विनाश है"। पृथ्वी पर लोग लगातार युद्ध करने के कारणों का आविष्कार करते हैं, यहाँ तक कि तथाकथित पवित्र युद्ध भी करते हैं, परन्तु उनके सभी युद्ध अन्यायपूर्ण कारणों के लिए हैं! सभी युद्धों का परिणाम संवेदनहीन विनाश और अकल्पनीय संकट है। प्रकृति या स्वयं के द्वारा, पृथ्वी पर लोग "शाँति का मार्ग नहीं जानते"। अर्थात्, वे शाँति का मार्ग नहीं "जाने हैं", क्योंकि हिंसा उनके बीच लगभग निरन्तर रहती है। इस प्रकार, विशेष रूप से राष्ट्रों और पृथ्वी पर विभिन्न गुटों के बीच हिंसा और युद्धों का प्रचलन साबित करता है कि पूर्ण मानव जाति आध्यात्मिक और नैतिक रूप से भ्रष्ट है!

(5) बाइबल ईश्वरविहीनता के प्रसार को साबित करती है।

यह भजन संहिता 36:1 का एक उद्धरण है। "उनकी दृष्टि में परमेश्वर का भय नहीं है"। "भय" शब्द का अर्थ श्रद्धा, भरोसा और डर है। स्वभाव के अनुसार पृथ्वी पर लोगों में परमेश्वर के सामने विस्मय (श्रद्धा) नहीं है और वे परमेश्वर पर भरोसा भी नहीं करते हैं। वे परमेश्वर के न्याय से नहीं डरते। वे ऐसे कार्य करते हैं जैसे कि कोई परमेश्वर नहीं है। वे ऐसे जीते हैं जैसे कि उन्हें कभी भी परमेश्वर

को इसका लेखा नहीं देना है कि वे कैसे जीते हैं। इस प्रकार, जीवित परमेश्वर के प्रति लोगों का अनादर यह साबित करता है कि आध्यात्मिक भ्रष्टता सार्वभौमिक है। पुराना और नया नियम दोनों ही मनुष्य की सार्वभौमिक भ्रष्टता के विषय में सिखाते हैं।

3:19-20

प्रश्न 5. **पौलुस के इस तर्क का अंतिम निष्कर्ष क्या है कि अन्यजाति और यहूदी दोनों परमेश्वर के सामने दोषी खड़े हैं?**

ध्यान दें।

(1) शब्द "व्यवस्था" के विभिन्न अर्थ।

पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था के कामों के बिना स्थापित होती है, परन्तु व्यवस्था फिर भी इस धार्मिकता की गवाही देती है। यहाँ एक स्पष्ट उदाहरण है कि पौलुस व्यवस्था के एक अर्थ से व्यवस्था के दूसरे अर्थ में कितनी सरलता से बदल जाता है। रोमियों को लिखे पत्र में शब्द "व्यवस्था" के विभिन्न अर्थों के बीच स्पष्ट रूप से भेद किए बिना इस पत्र को नहीं समझा जा सकता है। एक अर्थ में, व्यवस्था परमेश्वर द्वारा उचित ठहराए जाने के विपरीत बोलती है, और दूसरे अर्थ में यह परमेश्वर द्वारा उचित ठहराए जाने की घोषणा करती है। संदर्भ शब्द "व्यवस्था" का सटीक अर्थ निर्धारित करता है।

"जो भी व्यवस्था (पहला अर्थः परमेश्वर की पवित्र पुस्तक, तोराह, पुराने नियम के लेख) (रोमियों 3:19क) कहती है, वह उन लोगों से कहती है जो (सचमुच) व्यवस्था (दूसरा अर्थः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता) (रोमियों 3:19ख) "में शामिल हैं" (यूनानीः एन), ताकि प्रत्येक मुँह को शाँत किया जा सके और पूर्ण संसार परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हो।" पौलुस उन लोगों के विषय में बोलता है जो लोग व्यवस्था "में शामिल" हैं (यूनानीः एन) (रोमियों 3:12,19) (अर्थात्, जो कि परमेश्वर की माँग में शामिल हैं कि सभी लोगों को धर्मी होना चाहिए), और उन लोगों के विषय में नहीं जो व्यवस्था के "अधीन" (यूनानीः हूपो) हैं (तीसरा अर्थः लोग जो नैतिक, औपचारिक और नागरिक कानूनों और मानव निर्मित कानूनों को जो उन्होंने परमेश्वर के कानून में जोड़े हैं को मानने का प्रयास कर रहे हैं) (रोमियों 6:14) (अर्थात्, जो लोग नैतिक, औपचारिक और परमेश्वर के नागरिक कानूनों को मानने के द्वारा उचित ठहराए जाने का प्रयास करते हैं)।

(2) कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था से बाहर नहीं है और इसलिए वह परमेश्वर के न्याय और दोषी ठहराए जाने से परे नहीं है।

तीन तर्कों के आधार परः

- अन्यजातियों की ईश्वरहीनता और दुष्टता (रोमियों 1:18-32 में वर्णित)
- यहूदियों की अराजकता, अविश्वासयोग्यता, अधार्मिकता और असत्य (रोमियों 2:21 से 3:8 में वर्णित)
- और बाइबल की गवाही (रोमियों 3:10-18 में उद्धृत)

पौलुस निम्नलिखित निष्कर्ष निकालता हैः "संसार के सभी लोग परमेश्वर की व्यवस्था में शामिल हैं" या धर्मी आवश्यकता (परमेश्वर की धर्मी या उचित माँग) अर्थात् सभी लोगों को परमेश्वर के सामने 100ः पवित्र और धर्मी होना चाहिए और लोगों के सभी पाप 100ः दोषी ठहराए और दंडित किए जाने चाहिए। इस अर्थ में परमेश्वर की "व्यवस्था" (भगवान की आवश्यकता) सभी लोगों को संसार के

हर राष्ट्र में, हर संस्कृति और पूरे मानव इतिहास में प्रभावित करती है।

परमेश्वर की "व्यवस्था" या धार्मिक आवश्यकता निम्नलिखित हैः परमेश्वर की आवश्यकता है कि लोगों के सभी (100:) पापों को दंडित किया जाना चाहिए, कि सभी (100:) लोगों को परमेश्वर को स्वीकार्य होने से पहले उचित ठहराया और पवित्र किया जाना चाहिए। परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए, लोगों के पास एक नई अवस्था होनी चाहिए (अर्थात्, परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी और पवित्र हों) और एक नई जीवन-शैली होनी चाहिए (अर्थात्, धार्मिकता से और पवित्र रहें)। लोगों को क्षमा किया जाना चाहिए और नए जीवन जीने में सक्षम होने चाहियें! लोगों को परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए, भले ही वे अन्यजाति हों जिनके पास केवल परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन है (रोमियों 1:19-20; 2:14-15) या वे यहूदी हों जिनके पास परमेश्वर का विशेष प्रकाशन भी है (रोमियों 2:18)! जो लोग परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के *बाहर* हैं (मूल रूप से अन्यजाति) वे परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता के दायरे से *बाहर नहीं* हैं (रोमियों 1:19-20; रोमियों 2:14-15)। इसलिए वे भी न्याय और दोषी ठहराए जाने (सर्वनाश) से परे नहीं हैं, जिसके विषय में पुराना नियम बोलता है।

परमेश्वर के न्याय (और दंड) के लिए परमेश्वर की "व्यवस्था" या "धार्मिक आवश्यकता" एक ओर और दूसरी ओर परमेश्वर के उद्धार (उचित ठहराए जाने और शुद्धिकरण) के लिए बाइबल में परमेश्वर के निषेध और आज्ञाएँ शामिल हैं, उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ और अन्य नैतिक आज्ञाएँ (रोमियों 2:15; 3:20,21क)।

क्योंकि यह स्पष्ट है कि संसार में कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता है, यह भी स्पष्ट है कि सभी लोग परमेश्वर के धर्मी न्याय के तहत खड़े हैं! एक भी व्यक्ति न अपना मुँह खोल सकता और न इस तर्क के साथ आ सकता है कि क्यों परमेश्वर को उसे धर्मी घोषित करना चाहिए और उसे स्वर्गलोक (स्वर्ग) में स्वीकार करना चाहिए! एक भी व्यक्ति अपनी अधार्मिकता का बचाव नहीं कर सकता है!

(3) कोई भी व्यवस्था को पूर्ण रीति से नहीं मान सकता है और इसलिए व्यवस्था को मानने का प्रयास करने से कोई भी उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

इस संसार के इतिहास में प्रत्येक मुँह को चुप कराया गया है, "क्योंकि" (नहीं "इसलिए ") "कोई भी (कोई शरीर नहीं) "व्यवस्था" (नैतिक, औपचारिक और नागरिक कानूनों) का पालन करने से परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी घोषित किया जाएगा (रोमियों 3:20कख)"! भविष्यकाल व्यक्त करता है कि यह तथ्य एक पूर्ण निश्चितता हैः संसार में हर किसी को बाइबल के परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध और अपने जीवन और कार्यों (कर्मों) का परमेश्वर को एक लेखा देना होगा। संसार में कोई भी अपने स्वयं के प्रयास या व्यवस्था के अपने कार्यों से उचित ठहराया या बचाया नहीं जाएगा। यहाँ तक कि यदि वह कुछ कानूनों को मानता है, वह सभी कानूनों को नहीं मानता है – और परमेश्वर को 100: पूर्णता से कम कुछ भी नहीं चाहिए (गलातियों 3:11)! व्यवस्था (बाइबल की शिक्षाएँ और नैतिक नियमों) को मानने द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी घोषित किए जाने के लिए, व्यक्ति को कभी एक भी पाप या अपराध नहीं किया होना चाहिए (याकूब 2:10) और उसे परमेश्वर के सामने हमेशा एक पूर्ण सिद्ध जीवन जीया होना चाहिए (यशायाह 64:6)! इसलिए यह बहुत स्पष्ट है कि व्यवस्था के काम इस संसार के इतिहास में एक भी व्यक्ति को न उचित नहीं ठहरा सकते हैं और न ही ठहराएँगे!

रोमियों 3:19ख कहता है कि "व्यवस्था" इस अर्थ में <u>एक *न्यायाधीश* के समान</u> काम करती है। यह बाइबल के परमेश्वर और बाइबल में दिए गए उसके प्रकाशन के विरुद्ध प्रत्येक तर्क को चुप कर देता है और लोगों को बाइबल के परमेश्वर को एक लेखा देने के लिए जिम्मेदार बनाता है।

रोमियों 3:20ख कहता है कि "व्यवस्था" इस अर्थ में <u>एक *दर्पण* के समान</u> काम करती है। यह लोगों को दिखाता है कि परमेश्वर उन्हें कैसे देखता है। यह उन्हें दिखाता है कि वे वास्तव में कितने पापी हैं। और यह उन्हें सचेत करता है कि वे भ्रष्ट हैं।

और रोमियों 3:21क कहता है कि इस अर्थ में "व्यवस्था" <u>एक *उद्धारकर्ता* के समान काम नहीं करती है।</u> यह परमेश्वर की दृष्टि में लोगों को उचित ठहराने या बचाने का तरीका न प्रकट करता है और न कर सकता है। यह उद्धार (उचित ठहराए जाने और शुद्धिकरण) का एक तरीका न बताता है और न बता सकता है।

परमेश्वर की धार्मिकता जो मसीह में विश्वासियों को उचित *ठहरा सकती है* और *ठहराएगी* वह धार्मिकता है जो परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता को प्राप्त करने के प्रयास से पूर्ण रीति से अलग है जो बाइबल में नैतिक आज्ञाओं में व्यक्त की गई है।

पौलुस का निष्कर्ष है कि "व्यवस्था" का उद्देश्य लोगों को उचित ठहराना या बचाना कभी नहीं था। नैतिक कानून से पता चला कि परमेश्वर पवित्र और धर्मी है, उसी प्रकार लोगों को भी परमेश्वर के लोग बनने के लिए पवित्र और धर्मी होना चाहिए और सम्पूर्ण अपवित्रता और अधार्मिकता को दंडित किया जाएगा। औपचारिक कानून से पता चला कि कैसे लोगों को परमेश्वर के पास जाना चाहिए, आराधना करनी चाहिए और परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए। "व्यवस्था" एक व्यक्ति को इससे सचेत करती है कि पाप क्या है और कि वह एक पापी है, वह व्यक्ति जो परमेश्वर से अलग कर दिया गया है, आत्मनिर्भर होते हुए और परमेश्वर से स्वतंत्र होकर रहते हुए अपने जीवन के लिए परमेश्वर के लक्ष्य को खो रहा है! क्योंकि संसार में एक भी व्यक्ति परमेश्वर के "कानूनों" या आवश्यकताओं को पूर्ण रीति से सिद्धत्ता के साथ नहीं रख सकता है, ये "कानून" एक ओर तो लोगों को निराशा की ओर ले जाते हैं और फिर दूसरी ओर उन्हें यीशु मसीह के पास ले जाते हैं, जो केवल एकमात्र ऐसा है जो उचित ठहरा सकता है या उन्हें बचा सकता है (गलातियों 3:21-25)।

<u>चरण 4. लागू करना।</u> **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौनसे सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 3:1-20 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 3:1-20 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

3:1. मेरे लाभ मुझे परमेश्वर की दृष्टि में सही नहीं ठहरा सकते और मेरे अलाभ मुझे उद्धार के लिए अयोग्य नहीं ठहरा सकते। केवल परमेश्वर अनुग्रह और विश्वास के माध्यम से उचित ठहरा सकता है।

3:2. बाइबल पास में होना एक बड़ा लाभ है। उसे पढ़ें और अध्ययन करें!

3.3. परमेश्वर हमेशा विश्वासयोग्य रहेगा, भले ही मैं अविश्वासयोग्य हूँ (2 तीमुथियुस 2:13)। वह उद्धार के अपने वादे के प्रति विश्वासयोग्य रहता है *और वह अपनी न्याय की धमकी के प्रति विश्वासयोग्य रहता है!* जब मैं अविश्वासयोग्य होता हूँ, तो वह निश्चित रूप से अपने न्याय के प्रति विश्वासयोग्य रहेगा और मेरी अविश्वासयोग्यता पर दोष लाएगा!

परमेश्वर के समान होने का निश्चय करो। विश्वासयोग्य रहो!

3:4. परमेश्वर हमेशा सच बोलता है (गिनती 23:19)। बाइबल में दिए परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करो।

3:5-8. झूठे तर्क से सावधान रहें।

3:9. यह कभी न सोचें कि आपकी अपनी जाति, संस्कृति, भाषा या इतिहास दूसरों की तुलना में बेहतर है (गलातियों 3:28)

3:10-12. गहराई से आश्वस्त हों कि परमेश्वर के मानकों के अनुसार प्राकृतिक मनुष्य आत्मिक और नैतिक रूप से भ्रष्ट है।

3:13-14. अपने मुँह से निकलने वाले शब्दों पर ध्यान दें (भजन संहिता 141:3; मत्ती 12:36; 15:18-20)।

3:15-17. आदमी के झगड़ों और युद्धों में कभी शामिल न हों (याकूब 4:1-2)।

3:18. हमेशा जीवित परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध में वापस लौटें।

3:19. परमेश्वर की दृष्टि में स्वयं को सही ठहराने का प्रयास मत करो।

3:20. जैसे परमेश्वर आपको देखता है वैसे स्वयं को देखने के लिए आइने के रूप में बाइबल में दी गई शिक्षाओं और नैतिक कानूनों का उपयोग करें।

2. रोमियों 2:17-29 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

यह कहना, "आओ हम बुराई करें ताकि उसमें से अच्छाई निकल सके" (3:8) अनैतिक है और इसलिए एक गलत शिक्षा है। एक शिक्षक के रूप में, मैं ऐसी शिक्षा पढ़ाने हेतु अति सावधान रहना चाहता हूँ जो अपनी प्रवृत्ति में अनैतिक हो या बाइबल में दिए गए नैतिकता के सिद्धांतों के विरोध में हो। परमेश्वर के वचन के शिक्षक के रूप में, मैं परमेश्वर के वचन को सही ढंग से संभालना चाहता हूँ (2 तीमुथियुस 2:15)।

मैं लोगों को यह साबित करने के लिए बाइबल के भागों से उद्धरणों का उपयोग करना चाहता हूँ कि हर कोई स्वभाव से एक पापी है और अपने स्वभाव में भ्रष्ट है। यहाँ तक कि अन्य लोगों की दृष्टि में तथाकथित "अच्छे" लोगों को भी परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 3:1-20 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 2:17-29 का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2 शमूएल 2, 5, 6 और 7** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(5) रोमियों 3:28।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 13:44 में निहित **"छिपे हुए खजाने" का दृष्टांत** और मत्ती 13:45-46 में निहित **"बहुमूल्य मोती" के दृष्टान्त** की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।